ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 157-160

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

विजय दानदेथा : जीवन, परिवेश और साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं का अवदान

संतोष कुमार

शोध अध्येता– हिन्दी विभाग, केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, पेरिया (केरल)

Received- 04.04.2020, Revised- 09.04.2020, Accepted - 13.04.2020 E-mail: kapoorsantosh10@gmail.com

सारांश : *मनुष्य का जीवन कइ अवस्थाओं से हो कर गुजरता है। इन्हीं अवस्थाओं स प्राप्त अनुभव जीवन को नियमित एवं संगठित करने में सहायक होते हैं। मनुष्य समाज से विचारों, मान्यताओं, रूढ़ियों, अनुभव और संवेदनाओं को प्राप्त करता है। इन्हीं बाह्य एवं आन्तरिक आत्मानुभूतियों के पारस्परिक अंतर्विरोधों के फलस्वरूप एक वैचारिकी का उदय होता है जो व्यक्ति विशेष के व्यक्तित्व का निर्धारक होती है जिसमें उसके पूरे जीवन चरित्र की झलक मौजूद होती है। यदि व्यक्ति का बहुसंख्यक वर्ग द्वारा समर्थन मिलता है तो वहीं व्यक्ति ख्याति को प्राप्त कर समाज में लंबे समय तक याद किया जाता रहता है। उसक द्वारा किए गए कार्य सामाजिक उत्थान, राजनीतिक परिवर्तन, धार्मिक बदलाव कीमुहिम के लिए जाने जाते है। उसके आदर्श एक मिसाल के रूप में दूसरों के सम्मुख प्रस्तुत होते हैं। उसे जिस अनुशासन एवं कार्य क्षेत्र में दक्षता सिद्ध होती जाती है, वह उसी क्षेत्र का विशेषज्ञ या जानकार व्यक्ति बन जाता है। उसके इस स्थिति तक पहुँचने के दौरान वह अनगिनत पात्रों, परिस्थितियों, घटनाओंकेउतार –चढ़ाव के दौर से गुजरता है। वही उसके व्यक्तित्व को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से निर्मित करते हैं। ऐसें में यदि हम किसी भी महान हस्ती के जीवन वृत्त, व्यक्तित्व एवं सामाजिक मूल्यों को शब्दों में अभिव्यक्त करने का साहस करते हैं तो वह पूर्ण रूपेण सत्य सिद्ध न होकर अपितु अंशतः ही ठीक हो सकता है।*

कुंजीभूत शब्द– संगटित, मान्ताओ, रुढ़ियों, अनुभव, संवेदनाओं, आत्मानुभूतियों, पारस्परिक, अंतर्विरोधों, दक्षता।

बच्चों की सबसे पसंदीदा विधा के सजग प्रहरी विजय दान देथा हिंदी कहानी को अपनी लेखनी से जीवंत करने वाले लेखकों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। इनकी कहानियाँ सरल व सहज होने के साथ ही रोचक एवं मनोरंजन से भरपूर हैं। इनकी कहानियों में निहित अर्थ व्यक्ति को पुनः जागरूक एवं ऊर्जावान बनाने की क्षमता रखता है। इनकी कहानियों में जीवन के सभी पक्षों के दर्शन होते हैं। व्यक्ति की सभी चिंताओं समस्याओं का समाधान इनकी कहानियों में देखा जा सकता है।

विजयदान देथा का जन्म 1 सितंबर 1926 ई. को जोधपुर जिले के अंतर्गत आने वाले छोटे से गांव बोरुंदा में हुआ था। इनके पिता का नाम सबलदान जी देथा (1889–1930) और माता का नाम श्री मती सिरूँकँवर (1896–1946) था। यह जानकारी लेखक के अंक पत्रों पर अंकित प्रविष्टियों के आधार पर है। वे अपने मूल जन्मतिथि के बारे में बताते हैं कि – ''मेरी जन्मतिथि का सही पता मुझे नहीं है। घरवालों से पूछने पर केवल इतनी ही जानकारी मिली कि संवत 1981 के चौत्र मास में मेरा जन्म हुआ।''[1] इनकी जाति चारण थी। इस जाति के लोग पशु पालन का कार्य करते थे। ये लोग पशुओं को पालकर और उन्हें बेचकर अपना जीवन यापन करते थे। इस व्यापार के चलते रजवाड़ो–राज घरानों से उनके संबंध धीरे–धीरे अच्छे हो गए थे। इस व्यापार के चलते राज घरानों से इनको सहयोग प्राप्त होने लगा था। इनके पूर्व जईरान से सिंध होते हुए राजस्थान और गुजरात के क्षेत्रों में आकर बसे थे। इनके पूर्वज सन् 1960 ई के आस–पास खरोरा गांव अमर कोट सिंध सेबोरुंदा जोधपुर राजस्थान आए थे। इनके दादा जी अपने समय के जाने–माने कवि के रूप में प्रसिद्ध थे। वे कुछ कविताएँ एवं छंदों की रचनाकर सुनाया करते थे। जिसका प्रभाव इनके परिवार के अन्य सदस्यों पर भी पड़ा था।

विजय दान देथा की आरंभिक शिक्षा जैतारण से हुई। शिक्षा के प्रति लगाव के चलते लगभग 5–6 वर्ष की उम्र के बाद गाँव छोड़कर आगे की पढ़ाई के लिए बाड़मेर चले गए। ''छठी कक्षा से ही इन्हें कविताओं काशौ कथा। यह अपने चचेरे भाई कुबेरदान जी देथा की कविताओं को सुनकर एवं रटकर कक्षा में सुनाया करते थे। एक दिन उन्हें एहसास हुआ कि भाई की कविताओं को सुनाकर तालियां कब तक बटोरता रहूँगा क्योंना स्वयं की कविता लिखूँ। उसके बाद इन्होंने हिंदी ब्रज भाषा में कविताएं लिखी। पहली कविता 'बैरागीया नालाजुलमजोर जहां रहते थे तीन चोर' नरसिंह राज पुरोहित के साथ बैठकर बनाई। शाम तक स्कूल में हलचल मच गया खोखा और नरसिंह ने कविता बनाई कविता।''[2]

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

यह जितने पढ़ने में अच्छे थे, उतने ही शैतानी भी करते थे। इनके बाल मित्र खोखा कहकर पुकारते थे। संस्कृत इनका सबसे प्रिय विषय था। इनकी साहित्यिक किताबों के प्रति रुझान उम्र बढ़ने के साथ–साथ बढ़ता चला गया था। शरद चंद्र चटर्जी की कहानियों को बड चाव के साथ पढ़ते थे। यह चटर्जी के दीवाने थे। अपने स्कूली विषय की ओर कम ध्यान और कहानियों में इनका मन ज्यादा रमता था। जिसके चलते यह कक्षा बारह में फेल हो गए थे। इनकी मासिक छात्रवृत्ति को रोक दिया गया था। जिससे इन्हें कई परेशानियों का सामना करना पड़ा था। फिर भी ये विचलित नहीं हुए। अपने अथक प्रयास के बल पर कक्षा बारह की परीक्षा पुनः पास कर जोधपुर के जसवंत कालेज सेबी. ए. सन् 1949 ई. में पास किया था। इसके एक साल बाद सन् 1950 ई. में सायर कँवर (1936–2001) से इनका विवाह हुआ था। एम. ए. पूर्वार्ध (हिंदी) करने के बाद इन्हें एहसास हुआ कि साहित्य किताबों को बहुत पढ़ लिया गया इसलि एइन्हों ने एम. ए. पूर्वार्ध के बाद अपनी पढ़ाई को रोक दिया था। विजय दान देथा के पारिवारिक परिवेश में साहित्यिक गतिविधियों के मूल पहले से ही मौजूद थे। जिन्होंने देथा को साहित्यिक खादपानी का दायित्व भली–भाँति निभाया। अपने चचेरे भाई से काव्य सृजन की प्रेरणा इन्हें प्राप्त हुई। शरद चंद्र चटर्जी, स्वामी दयानंद सरस्वती, रविंद्रनाथ टैगोर के साहित्य ने इनके वैचारिक पृष्ठ भूमिको दृढ़ किया था। इनके विचारों को पल्लवित एवं पुष्पित किया था। इसके साथ ही प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, मैथिली शरण गुप्त, भगवती चरण वर्मा एवं अमृत लाल नागर जैसी महान हस्तियों की कृतियों ने देथा के युवा मन को सबसे अधिक प्रेरित एवं प्रभावित किया था। गोर्की, टॉलस्टॉय, जॉर्ज बर्नार्डशा, वर्ड फास्ट जैसे पाश्चात्य लेखकों की कृतियों को देथा ने खूब पढ़ा था। भारतीय एवं पाश्चात्य लेखकों की कृतियों को पढ़ने के उपरांत इनकी वैचारिकी को राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय एवं समसामयिक मुद्दों को एक नवीन ढंग से व्याख्या एवं विश्लेषण करने की अचूक दृष्टि प्राप्त हो गई थी। जिसने इनके लेखन कला को विस्तृत फलक का धुरंधर बना दिया था। इनकी अनुभूतियों को साहित्य के अनुकूल एवं बनाने में बांग्ला, हिंदी, राजस्थानी एवं अंग्रेजी साहित्य ने खूब सहयोग दिया जिसका प्रभाव इन के लेखन कला में स्पष्ट दिखाई देता है। देथा ने कविताओं से साहित्यकी सेवा आरंभ की थी। इसके साथ ही उन्होंन साहित्य की अन्य विधाओं निबंध, साक्षात्कार, आलोचना, समीक्षा, उपन्यास, बाल साहित्य पर अपनी लेखनी चलाई है। इनकी ख्याति कहानीकार के रूप में है। देथा ने सन् 1958–1949 ई. तक हिंदी में लेखन कार्य किया। इन्होंने लगभग तेरहसौ कविताओं का सृजन हिंदी भाषा में किया था और लगभग 300 कहानियों को हिंदी के सुपुर्द किया था। यह सभी प्रारंभिक लेखन के दौरान किया गया लेखन है, जिसका उचित संग्रहण न करने के कारण अधिकांश रचनाएँ प्रकाशित न हो सकी है।

साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में अवदान– विजय दान देथा ने लोक कथाओं और दंत कथाओं को संकलित एवं संरक्षित करने के लिए अपने गांव में प्रेस की स्थापना किया था। इन्होंने पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से विपुल लोक साहित्य को प्रकाशित भी किया है। ''सर्वप्रथम हिंदी काव्य संग्रह 'ऊषा' लिखने के बाद सन् 1948 ई. से लेकर सन् 1960 ई. तक कई पत्र–पत्रिकाओं का संपादन एवं प्रकाशन करते रहे हैं। सन् 1948 ई. सेसन् 1950 ई. तक 'ज्वाला' साप्ताहिक में काम करता था। 'ब्लिट्ज' की साइज के सोलह पृष्ठ निकलते थे। नियमित रूप से तीन स्तंभ लिखता था। 'हम सभी मानव हैं', 'दोजख की सैर' और 'घनश्याम, पर्दा गिराओ'। तीनों स्तंभों में कथा की बुनावट रहती थी मानव वाले स्तंभ में मानवता के तहत ही हर व्यक्ति की जाति, संप्रदाय, धर्म या मजहब का दायरा अभिन्न रहता था। आज के मुहावरे में सांप्रदायिकता के खिलाफ 'एकमानव' के नाम सेमेरी कलम अबाध चलती रहती थी। 'दोजख की सैर' में विभागीय भ्रष्टाचार पर कटाक्ष का स्वरूप रहता था। वह भी कथा के माध्यम से। 'घनश्याम, पर्दा गिराओ' मेंरा जनेताओं का पाखंड उजागर होता था। जब दर्शकों के सामने भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा आने लगती तब नेताजी जोर से चिल्लाते– घनश्याम, पर्दा गिराओ। यह तीनों स्तंभ तो लिखता ही था, पर पूरे के पूरे सोलह पृष्ठ अपने हाथों से फेयर करके प्रेस में देता था। कलम मँजती रही। धारल गती रही।''[3] यह वह दौर था जब लेख कबी.ए. प्रथम वर्ष के छात्र के रूप में भावी जीवन के लिए तैयार हो रहा था। कॉलेज से समय निकालकर स्तंभ लेखन का कार्य करते थे। सरकार के खिलाफ व्यंगात्मक लहजे में उत्तेजक लेख लिखने के कारण 'ज्वाला' को प्रतिबंधित किया गया था। उस समय राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री हीरा लाल शास्त्री थे। देथा ने लिखना नहीं छोड़ा। उन्होने अपने विचार लोगों तक पहुँचाने के लिए 'ज्वाला' पत्रिका का नाम बदलकर 'अंगारे' नाम से पत्रिका निकालने लगे। 'अंगारे' पर भीजब प्रतिबंध लगा दिया गया, तब उन्होंने 'आग' नाम से और जब उस पर भी प्रति बंध लगाया गया तब 'राख' नाम से पत्रिका का निरंतर संपाद न करते रहे।

प्रेरणा पत्रिका– इस पत्रिका को संपादित करने

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

की प्रेरणा देव नारायण व्यास ने दी थी। इन्हीं के कहने पर प्रकाश कोठारी, कोमल कोठारी और देथा ने मिलकर सन् 1953 ई. से प्रकाशन की जिम्मेदारी उठाई थी। इसके संपादक के रूप में कोमल कोठारी और बिज्जी ने उत्तरदायित्व संभाला था। इस पत्रिका के नव अंक तक कोमल कोठारी और बिज्जी ने साथ–साथ काम किया। पत्रिका के नव अंक में से दो अंक विशेषांक के रूप में भी प्रकाशित हुए थे। चौथा अंक 'मेघदूत का राज स्थानी' विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ जब कि छठा–सातवां अंक 'प्रेमचंद्र के पात्र' विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया हैं। सम्पादक लिखते है कि– ''प्रेरणा का छठा–सातवाँ विशेषांकथा– प्रेम चंद के पात्र। पहले अंक से ही जिसका बीजारोपण हो गया था। पुस्तक रूप में उसका पहला संस्करण राजेंद्र या दवने अक्षर प्रकाशन से किया। जब उसका दूसरा संस्करण वाणी प्रकाशन नई दिल्ली से 'प्रेमचंद की बस्ती' नाम से प्रकाशित हो रहा है।''[4] प्रेमचंद्र के पात्र' विशेषांक साहित्यिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है। इसको निकालने में विजय दान देथा, कोमल कोठारी, प्रयागराज मेहता, शिव रतन थानवी और मन्नू भंडारी ने प्रेम चंद के उपन्यासों एवं कहानियों के पात्रों जैसे– सूरदास, होरी, धनिया, मालती, मेहता, सुमन, जालपा, सोफिया, बलराज, हामिद, जुम्मनशेख, बड़ेभाईसाहब, घीसू, माधव, मोटे राम शास्त्री के साथ ही अन्य कई पात्रों का विवेचन–विश्लेषण करने का महत्वकांक्षी प्रयास किया है। इस विशेषांक के पात्रों के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए देथा लिखते हैं कि– ''भारतीय साहित्य के अपने महा नगर में प्रेमचंद के सभी पात्रों की एक अलग ही बस्ती बस गई है। और उनका हर पात्र अपने पूर्ण परिवेश के साथ अपने कार्य कलापों में व्यस्त हैं। जिस उम्र के पड़ाव पर प्रेमचंद जी उन्हें छोड़ गए, वे सभी जिंदा है। औरतो और उनके मृत–पात्र भी इस बस्ती में आकर फिर से जीवित हो गए हैं। होरीइन सबका मुखिया है और धनिया नारी मुक्ति की मशाल हाथ में लिए घर घर अलख जगा रही है। सूरदास निस्पृह भाव से वक्त–जरूरत सबकी सेवा करता है। होरी और सूरदास में खूबगाढ़ी छनती है। पर इस बस्ती के संबंध में एक आश्चर्य जनक, दुखद व ज्वलंत समस्या यह भी है कि आगे किसी की भी कोई संतति नहीं बढ रही है। और न किसी पात्र की उम्र बढ़ रही है। वे सभी अपार–अमर है।''[5] इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए कोमल और बिज्जी ने रात–दिन मेहनत किया था। पत्रिका हिंदी जगत में खूब सराही गई। इसके पहले अंक ने लेखकों को उचित आदर सम्मान दिलाया जिसकी वे कामना करते थे। प्रेरणा के बंद होने परपरंपरा पत्रिका का संपादन किया। यह पत्रिका सन् 1956 ई. से सन् 1958 ई. तक चौपासनी शोध संस्थान, जोधपुर से प्रकाशित होती रही है। इसके तीन अंक बहुत ही महत्वपूर्ण (लोकगीत, गोराहटजा, जेठ वैरा सोरठा) हैं। इस पत्रिका के अधिकांश भाग का लेखन स्वयं बिज्जी के हाथों हुआ है। इसमें लोक साहित्य संबंधित कहानियों को स्थान दिया जाता था। सन् 1958 ई. में बिज्जी एक आलोचनात्मक कृति 'साहित्य और समाज' की रचना करते हैं। इस कृति के लेखन के उपरांत स्वयं का प्रेस लगाने और एक संस्था बनाने का विचार करते हैं। जिससे संग्रहित किए गए लोक कथाओं का प्रकाशन पत्र–पत्रिकाओं के साथ ही किताबों के रूप में भी किया जा सके। इसके लिए उनकी मदद उद्योग पति शाह गोवर्धन लालजी काबरा ने किया था। उस समय काबरा साहब संगीत नाटक अकादमी के प्रथम अध्यक्ष पद पर आसीन थे। इनके कहने पर ही कथा कार अपने गाँव में आकर साहित्य सर्जन का कार्य करना शुरू करता है। शाह गोवर्धन लालजी काबरा जिन्हें बिज्जी व अन्य लोग प्यार से बाबा–सा कहते थे, ने देथा को समझाया कि'जोधपुर छोड़कर तू अपने गाँव जा और बरसों से चली आ रही लोक कथाओं को सुनकर उन्हें अपनी कहानी–कला का बाना पहना। 'सन् 1958 ई. के बाद संपादक एवं कवि बिज्जी अपने गांव बोरुंदा आते हैं। गांव में ही प्रेस की स्थापना करते है। प्रेस के लगाने के लिए उद्योग विभाग के निर्देशक त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी ने विभाग से आठ हजार का ऋण मुहैया कराया था। लेखक ने प्रेस के सहयोग से ही अपनी लेखनी को रफ्तार दिया। उन्होंने अपने अथक प्रयास से लोक साहित्य की फुल सामग्री को लिपि बद्ध किया था। लेखक बताते है कि– ''सन् उन्नीस सौ बासठ की दीपावली पर 'बातांरी फुलवाड़ी' का पहला भाग निकला। उस वक्त मेरी लिखने की रफ्तार–सत्रह कंपोजिटर, मैं अकेला लेखक...प्रेस पर दूसरा कोई काम नहीं लेता था। सवेरे तीन बजे उठता, कंपोजिटरों के नौ बजे आने तक बीस–पच्चीस पेज तक लिखलेता। होड़ लगी रहती थी कि उनकी कंपोजिंग पहले खत्म होती है या मेरी मेरा लेखना। पूर दिन लगा रहता–दोगेली प्रूफ, फिर दो पेज प्रूफ, मशीन प्रूफ...इस तरह करते–करते सन् उन्नीस सौ इक्यासी तक 'फुलवाडी' के तेरह भाग संपूर्ण होगए– पाँच–पाँच, छह–छह सौ पृष्ठों के। आर्थिक कठिनाइयों की वजह से प्रेस न बेचना पड़ता तो अब तक तीस–बत्तीस भाग निकल जाते। जी हाँ, 'राजस्थानी हिंदी कहावत कोश' उसके आठ भाग सोलह–सत्रह घंटे काम करके नौ साल में निकाले थे। यह देखिए–आठ खंड है इसके! हाँ, बेटी की शादी के कारण बेचना पड़ा प्रेस! प्रेस के कारण ही मेरी शक्तियाँ एक ठौर केंद्री भूत होती थीं–अवकाश में– लेजर टाइम में वह नहीं होती।''[6] इन्होंने मासिक पत्रिका 'लोक संस्कृति' का संपादन सन् 1961 ई. से लेकर सन् 1976 ई. तक कोमल कोठारी के साथ करते रहे। गाँव के परिवेश ने भाषा सौन्दर्य, प्रांजलता और मातृभूमि के अमूल्य रत्नों ने लेखक को वास्तविक लोक के निकट पहुँचा दिया। इसी मिट्टी से जुड़े देथा अपनी लेखनी को धारदार बना सके। सन् 1960 ई.

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

मेंरू पायन संस्थान, लोक संस्कृतिक केंद्र की स्थापना किया। इस तरह देथा ने पत्र–पत्रिकाओं और लोक संस्कृति संस्थाओं की स्थापना करके विपुल साहित्यिक सामग्री को प्रकाशित कर लोकसाहित्य की सेवा किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. संयोग की लीला, विजय दान देथा, रचना संचयन, पृष्ठ संख्या– 556।
2. विजय दान देथा रचना संचयन पृष्ठ संख्या–708।
3. सपने प्रिया, इधर–उधर, पृष्ठ संख्या– 11।
4. प्रेमचंद की बस्ती, अंतर पुट, हाँहै!, पेज नंबर–14, वाणी प्रकाशन, संस्करण–2009।
5. वही, पृष्ठ संख्या–14।
6. बिज्जी से प्रेमचंद की बात चीत, कैलाश कबीर, संपादक,विजय दान देथा रचना संचयन, संस्करण–2012, पृष्ठ संख्या–714।

*****